

सकारात्मक सोच

स्वस्थ और मधुर जीवन का पहला और आखिरी मंत्र है: सकारात्मक सोच। यह एक अकेला मंत्र है, जिससे न केवल व्यक्ति और समाज की, वरन् समग्र विश्व की समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। यह सर्व कल्याणकारी महामंत्र है। मेरी शान्ति, सन्तुष्टि, तृप्ति और प्रगति का अगर कोई प्रथम पहलू है, तो वह सकारात्मक सोच ही है। सकारात्मक सोच ही मनुष्यों का पहला धर्म हो और यही उसकी आराधना का बीज मंत्र है। सकारात्मक सोच का स्वामी सदा धार्मिक ही होता है। सकारात्मकता से बढ़कर कोई पुण्य नहीं और नकारात्मकता से बढ़कर कोई पाप नहीं, सकारात्मकता से बढ़कर कोई धर्म नहीं और नकारात्मकता से बढ़कर कोई विधर्म नहीं। कोई अगर पूछे कि मानसिक शान्ति और तनाव—मुक्ति की दवा क्या है, तो सीधा—सा जवाब होगा—सकारात्मक सोच। मैंने अनगिनत लोगों पर इस मंत्र का उपयोग किया है और आज तक यह मंत्र कभी निष्फल नहीं हुआ। सकारात्मक सोच का अभाव ही मनुष्य की निष्फलता का मूल कारण है।

निवेदक

कुंजीलाल मीणा

राज्य परियोजना निदेशक, डीपीआईपी
एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
बायो—फ्यूल